

**खाकी**

# सोनिया का सिस्टम, मोदी का सिस्टम

विकास नारायण राय

'सिस्टम विफल नहीं हुआ, मोदी सरकार विफल हुयी है।' दूसरी कोरोना लहर पर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के इस हालिया कथन में हालांकि उनका दूसरे स्वतः स्पष्ट हिस्से पर जोर है, लेकिन मैं फिलहाल इसके पहले हिस्से पर केन्द्रित हूँ और उससे बेहद सहमत भी हूँ। मोदी सरकार देश के इलीट वर्ग को पूर्णतया आश्वस्त न रख पाने के लिहाज से विफल है, अन्यथा सिस्टम विफल नहीं! इसके स्वास्थ्यकर्मी, पुलिसकर्मी, मरघटकर्मी पहले जैसे ही तो हैं। किसी आंकड़ेबाज को सुनिए- रोज 4 लाख मामले और 4 हजार मृत्यु यानी 1 फीसद ही तो। गिनाएगा- टीके की धोर कमी के बावजूद तेजी से टीका लगाने में भारत ने विश्व रिकॉर्ड बना लिया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक कोरोना सुनवाई में अभूतपूर्व महामारी मौतों को नरसंहार तक कह डाला और एनडीटीवी के स्टार मोदी क्रिटिक एंकर रवीश कुमार ने भी कोरोना से अपनी प्रतीक्षित बापसी पर प्रशंसकों से इसे नरसंहार ही कहने की अपील की है। ये क्रमशः न्यायिक अतिरेक और मीडिया अतिरेक अभिव्यक्ति की बानगी हैं। न उच्च न्यायालय किसी को 'नरसंहार' की सजा सुनाने जा रहा है और न रवीश कुमार किसी को 'नरसंहार' के मानक पर कस पायेंगे। लिहाजा, सोनिया का



राजनीतिक परिप्रेक्ष्य ही ज्यादा जमीनी है। दरअसल, सहज ही परखा जा सकता है,। वर्ष पूर्व भारत में सोनिया शासन के उखड़ जाने और इस बीच मोदी शासन के जम जाने के अंतराल में देश का स्वास्थ्य तंत्र रत्ती भी नहीं बदला है।

खुदा न खास्ता, अगर कल को एक खेमे का विशिष्ट सदस्य कोरोना के चपेट में आ गया तो दूसरे खेमे वाला उसे श्रद्धांजलि देने में कोई कोर-कसर छोड़ेगा? शक हो तो गोदी मीडिया के तालिबानी जमरे रोहित सरदाना की असामयिक मौत पर रवीश कुमार की लम्बी भाव भरी श्रद्धांजलि पढ़ी जानी चाहिए। यह तंत्र की सफलता का ही उदाहरण हुआ।

बेशक, कोरोना की चपेट में कोई भी कर्हीं भी आ सकता है लेकिन कौन कहाँ मरेगा, शासन तंत्र यह पहले की तरह ही तय कर रहा है। रसुखदार और धनी तबका कॉर्पोरेट अस्पतालों की देखभाल में, मध्य वर्ग 'अच्छी' चिकित्सा सुविधा के जुगाड़ में और गरीब इनके अभाव में! शहरों में सरकारें झूठी-सच्ची तसल्ली देती रहती हैं और मीडिया में कच्ची-पक्की जवाबदेही की खबरें चलती रहती हैं, गाँवों में वह भी नहीं। क्या जमाने से यही सिस्टम नहीं चल रहा?

सरकारी अस्पतालों को सरकारी स्वास्थ्य जिम्मेदारी की खाना-पूर्ति का काउंटर बना देना दशकों से सिस्टम का हिस्सा रहा है; अब, महामारी के दौर में, उसे 'विफल' कैसे कहा जा सकता है? हाँ, इन पर ज्यादा खर्च दिखा कर ज्यादा बड़ी खाना-पूर्ति का ज्यादा बड़ा ढोंग जरूर किया जा सकता है। बेशक, प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में कोरोना प्रबंधन को लेकर भारत की राष्ट्रीय शर्म का प्रतिरूप बना दिए गए हैं, सिस्टम के ठीक होने को लेकर सोनिया का भी दावा इससे अधिक कुछ नहीं।

सोचिये, अस्पताल के नाम पर, प्रशासनिक कमीशन तंत्र के चलते, बिल्डिंग और उपकरण पर फिर भी खर्च होना सदा से रहा है लेकिन, जैसे कोई अलिखित नियम हो, आपात कालीन वार्ड के लिए भी ऑक्सीजन संयंत्र एकदम नहीं बनाए

जाते। क्यों? क्योंकि, शुरू से ही, किसी भी अन्य सप्लाई की तरह ऑक्सीजन सप्लाई भी व्यापक कमीशन तंत्र का हिस्सा रही है। अगर कोरोना दौर के वर्तमान शोर-शराब में अस्पतालों के लिए अपने ऑक्सीजन संयंत्र बनाने पड़ भी गए तो यकीन वे हमेशा खर्चीते रख-रखाव के शिकार बने रहेंगे।

क्या कोरोना से जुड़ी हर आवश्यक चीज की कालाबाजारी नहीं चल रही? और कानूनी कार्यवाही बिचौलियों, जमाखोरों और मनाफाखोरों को लेकर आंकड़ेबाजी तक सीमित नहीं? क्या हर तरह के विशेषज्ञ और हर तरह के सुविधा-संपन्न अस्पताल देश में नहीं हैं? क्या किसी ने कभी भूले से भी यह कहा है कि इनमें जरूरतमंद को ही प्राथमिकता दी जाए? यही वह जाना-पहचाना सिस्टम है जिसकी बात सोनिया ने की है और जिसमें तनिक भी खरोंच नहीं आने पायी है।

मसलन, नॉर्डा से गुरुग्राम के प्रसिद्ध मेदांता अस्पताल में मरीज लाने के लिए 50,000 रुपये लेने पर एक एम्बुलेंस वाले को अवश्य धूम-धड़ाके से पकड़ा गया होगा जबकि उसी मेदांता में रोज मरीजों से धड़ले से कई गुना ओवर-चार्जिंग होती रही है। एक तरह से यह उनकी विशिष्टता की पहचान की ग्राहक-सम्मत प्रणाली बन चुकी है। इसी मेदांता के सर्वे-सर्वा को सर्वोच्च भी ऑक्सीजन संयंत्र एकदम नहीं बनाए

में भी नामित किया है। इसी तरह, दिल्ली एम्स के दरवाजे शक्तिमानों के लिए ही खुलते हैं जबकि उसके डायरे क्टर सर्वसाधारण में कोरोना ज्ञान बांटने के सबसे बड़े मीडिया चहेते बने हुए हैं।

अगर आज एक कोरोना हीरो को चिह्नित करना हो तो आपके जेहन में किसका नाम आएगा? बॉलीवुड के सितारे सोनू सूद का ही न! मीडिया में उन्हें उनके मुंह पर ही एक 'मसीहा' बताया जा रहा है और वे प्रायः मंद मुस्कराहट के साथ इसे स्वीकार करते देखे जा सकते हैं। ठहरिये, सभी को कैसे पता चल जाता है कि क्रिकेटर सुरेश रैना के किसी करीबी को ऑक्सीजन इमरजेंसी में सोनू सूद काम आये? वे कृष्ण भी करें, तुरंत चर्चित हो जाता है। यह भी कि मदद की जितनी गुहार उनके पास आई हैं, वे 2035 तक निपटा पायेंगे। क्या सिस्टम यही नहीं है? क्या इसे सिस्टम की विफलता कहेंगे?

क्या जेल मैन्युअल अपना काम ही नहीं कर रहे कि दम तोड़ते महावीर नरवाल की महीनों से अमित शाह की जेल में बंद बेटी नताशा से बात/मुलाकात नहीं हो सकी? एकटर-यूट्यूबर राहुल वोहरा ने अस्पताल में मरते समय कहा, "मुझे भी अच्छा इलाज मिलता तो शायद मैं भी बच जाता।" लेकिन, यही तो सिस्टम है! मैं कांग्रेस अध्यक्ष से सहमत हूँ। (पूर्व डायरेक्टर, नेशनल पुलिस अकादमी, हैदराबाद)

## गंगा में बहती लाशें रेत में दफन होने को मजबूर, परंपरा तार-तार



कृष्णकांत

यापी में गंगा नदी अपने जीवन का सबसे खौफनाक मंजर देख रही है। उत्ताव में गंगा किनारे सैकड़ों शव बिखरे हैं। भयानक मंजर है। अखबार लिखते हैं कि गंगा के घाट पर ये सदी का सबसे खौफनाक नजारा है। उत्ताव के बक्सर में गंगा किनारे रेत में महज 500 मीटर में अनगिनत लाशें दफन हैं। रेत हटने से कई शव बाहर आ गए हैं। चारों तरफ मानव अंग बिखरे पड़े हैं। लाशों को कुत्ते नोच रहे हैं। 1918 के स्पैनिश फ्लू से भी बदतर हालात हैं।

उत्ताव के ही बीघापुर में लोगों ने बताया है कि हर रोज कुत्ते घाट से लाशें खोंचकर बस्ती तक ले आते हैं। सामान्य दिनों में हर दिन 8 से 10 लाशों का ही अंतिम संस्कार होता था, लेकिन अब हर रोज 100 से 150 लाशें पहुंच रही हैं। ज्यादातर लोग शवों को दफन करके चले जाते हैं। प्रशासन ने कहा है कि वह इसकी जांच करेगा। अद्भुत मासूम प्रशासन है कि उसे सैकड़ों मौतों के बारे में पता ही नहीं है।

उत्ताव के शुक्लागंज घाट पर 800 मीटर के दायरे में 1200 से ज्यादा लाशें दफन की गई हैं। ग्रामीण बताते हैं कि बड़ी संख्या में लोग ऐसे आ रहे हैं, जिनके पास अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियां खरीदने की क्षमता नहीं है। वे घाट किनारे शव दफन करके चले जाते हैं। घाट पीपीई किट, मास्क, डेंडबॉडी कवर से पट गए हैं।

1918 में फैले स्पैनिश फ्लू के दौरान भी भारत में करीब 1.7 करोड़ लोग मारे गए थे। तब भी शवों के अंतिम संस्कार के लिए जगह नहीं थीं। लोग शवों को नदियों के किनारे फेंककर चले जाते थे। उन लाशों को कुत्ते और पक्षी नोचकर खाते थे।

भारत की जीवन रेखा गंगा सदी की सबसे बड़े तबाही की गवाह बन रही है। जो गंगा लाखों भारतीयों को जीवन देती है, रोजगार देती है, उसी गंगा के दामन में आज सैकड़ों शव बिखरे हैं या उफना रहे हैं।

हिंदुओं को विश्वगुरु बनाना था। धर्म और संस्कृति की रक्षा करनी थी। नारों में यही कहा गया था। लेकिन इस तबाही ने हिंदुओं से उनकी परंपरा छीन ली। वे शवों को जलाने की जगह रेत में दफना रहे हैं। नेता की आलोचना पर आहत हो जाने वाले भड़वे चुनाव के जरिये लाई गई इस त्रासदी से आहत नहीं हो रहे हैं। अपने अनगिनत बेटों की लाशों के लिए गगा का दामन छोटा पड़ गया है। ज्यादातर लोगों की मौत रिकॉर्ड में नहीं है क्योंकि उन्हें न अस्पताल मिला, न जांच हुई।

क्या भारत 1918 की गुलामी से भी बुरे हालात में हैं? आंकड़ों में 4 हजार मौतें हैं। क्या भारत अपने 4 हजार नागरिकों के शव सम्मानजनक ढंग से ठिकाने नहीं लगा सकता? क्या सैकड़ों, हजारों मौतें छुपाई जा रही हैं? क्या भारत अपनी राजधानी में प्रधानमंत्री की खोपड़ी पर ही किसी अस्पताल में आक्सीजन से मरने वाले को आक्सीजन नहीं दे सकता? भारत इतना मजबूर कब हो गया? हो गया या बना दिया गया?

जिस तरह के वीडियो और तस्वीरें आई हैं, वे शेयर करने लायक नहीं हैं। लेकिन उससे भी ज्यादा खौफनाक वह सरकारी झूठ, घटयंत्र और